समावेश

एक पहल...

अंक 3, फरवरी–अप्रेल 2011

समुदाय आधारित पुनर्वास कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकाशित

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

कट्स द्वारा "साइटसेवर्स" के सहयोग से चलाऐ जा रहे "समुदाय आधारित पुनर्वास कार्यक्रम" के तहत पिछले तीन महीनों में विकलांग जनों के कल्याण के लिये काफी काम हुआ है।

इस अंक में नेत्र रोगियों के लिये लगाऐ गऐ शिविर, आखों के ऑपरेशन, विकलांगों को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाना, विकलांग बच्चों को शिक्षा से जोडना, विकलांगो को उनके अधिकारों की जानकारी देकर उनका सशक्तिकरण करना व चित्तौड़गढ़ के जिला अस्पताल में आंखों के ऑपरेशन की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। इसमें बच्चों के लिये कुछ उपयोगी जानकारियां जैसे ब्रेल लिपि व चित्तौड़गढ़ विकलांग मंच की योजनाओं की जानकारी दी जा रही है।

आपको यह अंक कैसा लगा? इस अंक के बारे में आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं.....

'संपादक मंडल'

नेत्र रोगियों के लिये शिविर

मार्च 2011 में नेत्र रोगियों के लिये दो शिविर लगाऐ गऐ। पहला शिविर 1 मार्च 2011 को चित्तौड़गढ़ शहर में और दूसरा शिविर 10 मार्च 2011 को निम्बाहेडा तहसील के कनेरा गांव में लगाया गया। दोनों केम्प में कुल मिलाकर 509 रोगियों की निःशुल्क जांच की गई। इन 509 रोगियों में से 162 रोगी ऑपरेशन योग्य पाऐ जाने पर गोमाबाई नेत्रालय, नीमच में निःशुल्क ऑपरेशन हेतु रेफर किये गये तथा दवाईयां व चश्में वितरित किये गऐ। ऑपरेशन के पश्चात इन रोगियों की आखों रोशनी वापस आ गई तथा इन लोगों को अच्छी तरह से दिखाई देने लगा।

कट्स द्वारा नेत्र रोगियों का शिविर लगने के सप्ताह पूर्व से परियोजना क्षेत्र में शिविर का प्रचार प्रसार किया गया। शिविर में गोमाबाई नेत्रालय, नीमच से आई डॉक्टरों की टीम द्वारा रोगियों की निःशुल्क नेत्र जांच की गयी। गोमाबाई रेफर किये गये मरीजों को ऑपरेशन हेतु प्रेरित कर उनका ऑपरेशन करवाया गया।

ऑपरेशन किये गये मरीजों के लिये दो फॉलोअप केम्प रखे गये। चित्तौड़गढ़ में पहला फॉलोअप 11 मार्च और दूसरा फॉलोअप 14 अप्रेल को था जिसमें 27 चश्में वितरित किये गये। निम्बाहेड़ा ब्लॉक में पहला फॉलोअप 18 मार्च को तथा दूसरा 28 अप्रेल को किया गया जिसमें 28 चश्में वितरित किये।

हिम्मत नहीं हारी

चित्तौड़गढ़ जिले के ग्राम पंचायत तुम्बड़िया के गांव रोजड़ा मे जब ग्राम सम्पर्क किया जा रहा था तब कार्यकर्ता की मुलाकात वहां रहने वाले छगन लाल लौहार से हुई। जो बचपन से ही पोलियो से ग्रसित है और उसे चलने फिरने में परेशान होती है। वह 29 साल का 11वी कक्षा तक पढ़ा लिखा है और अपने परिवार को चलाने के लिये किसी काम की तलाश में था।

दूसरी बार जब कार्यकर्त्ता तुम्बड़िया बेस लाईन सर्वे करने गई तब छगन पुनः कट्स कार्यकर्त्ता से मिला। उसका हाल चाल पूछने पर उसने बताया कि वह किसी काम की तलाश में है। वह अपने मां बाप का इकलौता बेटा है, उसकी शादी हो चुकी है और उसकी 2 बेटियां पायल व आरती है। उसके परिवार की माली हालत कमजोर है इसलिये वह अपने परिवार के गुजर बसर हेतु काम करना चाहता है। छगन किसी पर बोझ नहीं बनना चाहता और मेहनत कर अपना जीवन यापन करना चाहता है। उसने कभी हिम्मत नहीं हारी और परिवार के लिये काम की तलाश में घूमता रहा।

एक दिन कार्यकर्ता को चित्तौड़गढ़ विकलांग मंच के अध्यक्ष मोहन लाल जाट से पता चला कि भीलवाड़ा जिले में आई.एल.एफ.एस संस्था है जो बी.पी.एल परिवार के विकलांग सदस्यों को निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान कराती है और प्रशिक्षण के एक माह बाद नौकरी प्रदान करवाती है। यह जानकारी छगन को प्रदान की गई व मोहनजी से सम्पर्क करने को कहा। मोहनजी ने छगन का मार्गदर्शन किया और उसका आवेदन भरवाया।

01 मार्च 2011 से 30 मार्च 2011 तक उसने भीलवाड़ा में कम्प्यूटर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उसकी मेहनत और हिम्मत रंग लाई और छगन ने सफलता की पहली सीढ़ी पर कदम रखा। प्रशिक्षण के एक माह पश्चात ही उसकी नौकरी चित्तौड़गढ़ के ऐयरटेल ऑफिस में 3000 रूपये प्रतिमाह पर लग गई है। अब छगन खुश है कि वह अपनी मेहनत के पैसों से अपने परिवार का गुजर बरस कर रहा है। विकलांगता उसकी तरक्की के लिये बाधा नही बनी जबकि उसकी हिम्मत व विश्वास ने उसके सपने को कारगार सिद्ध किया।

लिया प्रशिक्षण

नेशनल एसोशियेशन फॉर ब्लाईण्ड फरीदाबाद द्वारा एजुकेशन फेसीलिटेटर को एक माह का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कट्स संस्था से रामेश्वर पचौरिया व गोवर्धन पारिक ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण 28 फरवरी से 27 मार्च तक प्रदान किया गया। प्रशिक्षण में उन्होंने ब्रेल लिपि का उपयोग व उसके माध्यम से नेत्रहीनों को शिक्षा प्रदान करने की विद्या सीखी। साथ ही नेत्रहीनों के रहन सहन व उनके स्वस्थ जीवन जीने के तरीके बताये गये।

शेयर्ड विजन फाउण्डेशन जोधपुर द्वारा अप्रेल माह में समुदाय आधारित पुनर्वास कार्यक्रम की 10 सदस्यों की टीम को 13 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में आंखों की संरचना, आंखों से जुड़ी मुख्य बीमारियों और उनका इलाज, 10 प्रकार की विकलांगता, समुदाय आधारित पुनर्वास, नेत्रहीन व्यक्तियों के दैनिक कार्य व चलना –फिरना, विकलांगों के लिये विभिन्न सरकारी योजनाऐं, विकलांगों के लिये अधिकार एवं कानून, ब्रेल लिपि, आंखों के इलाज के लिये केम्प लगाना, दस्तावेजीकरण व रिपोर्टिंग आदि विषयों पर जानकारी दी गई।

गांवों में चलाया जागरूकता अभियान

संस्था द्वारा गांव में जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसकी पहली बैठक 19 फरवरी 2011 को बड़ौदिया गांव में रखी गई। कुल 47 गांवों में समुदाय बैठकों का आयोजन किया जा चुका है।

बैठक में समुदाय को विकलांगजनों के अधिकार तथा सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है। समुदाय को विकलांगों के प्रति संवेदनशील बनने पर जोर दिया जाता है। बैठक के पश्चात विकलांगजनों के विभिन्न योजनाओं के लिये आवेदन भी भरवाये जाते है।

जिला अस्पताल में नेत्र स्वास्थ सेवाऐं बेहतर बनाने का प्रयास

चित्तौड़गढ़ जिला मुख्यालय स्थित राजकीय सांवरियाजी अस्पताल में नेत्र चिकित्सा की स्थिति सही नहीं है। अधिकांश रोगियों को इलाज के लिये अन्य अस्पतालों में जाना पड़ता है। इस कारण कुछ रोगियों का इलाज नहीं हो पाता है तथा उनकी नेत्र ज्योति समाप्त हो जाती है। यह बात कट्स संस्था के समन्वयक आशीष त्रिपाठी द्वारा जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में 20 जनवरी 2011 को पहली बार रखी गयी।

इस बात से सहमत होते हुये जिला अस्पताल में नेत्र स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूती प्रदान करने हेतु एक समिति उप मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी चित्तौड़गढ़ की अध्यक्षता में गठित की गयी। इस समिति में नेत्र चिकित्सक डॉ. देवेश शर्मा, जिला फेसीलिटेटर यूनिसेफ, स्वास्थ्य प्रबंधक जिला अस्पताल, समन्वयक कट्स मानव विकास केन्द, प्रतिनिधि साइटसेवर्स एवं प्रतिनिधि गोमाबाई नेत्रालय, नीमच को सदस्य के रूप में शामिल किया गया है। इस समिति ने सरकारी अस्पताल का निरीक्षण कर अपनी रिपोर्ट तैयार की एवं नेत्र चिकित्सा सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिये सुझाव दिये।

रिपोर्ट के अनुसार चित्तौड़गढ़ जिले में लगभग 26000 मोतियाबिन्द के मरीज हैं। जिले में प्रतिवर्ष लगभग 11000 आंखों के मोतियाबिन्द के ऑपरेशन होने चाहिये परन्तु पिछले कुछ सालों से औसतन 4500 ऑपरेशन ही हो पाते हैं। अतः लगभग 6500 ऑपरेशन प्रतिवर्ष की बढ़ोत्तरी हो रही है। इस हिसाब से वर्ष 2020 तक बकाया मोतियाबिन्द ऑपेरशन की संख्या 1 लाख 10 हजार तक पहुंच जायेगी।

राजस्थान में चित्तौड़गढ़ जिले का अंधता निवारण कार्यक्रम बड़े तौर पर स्वयंसेवी संस्थाओं पर आधारित है जो 80 प्रतिशत है। 16 प्रतिशत योगदान मोबाईल युनिट व 4 प्रतिशत जिला अस्पताल का योगदान होता है। जिला बड़े तौर पर मौसमी शिविर पर निर्भर है। चित्तौड़गढ़ जिले में नेत्र स्वास्थ्य की स्थिति के बारे में सुझावों हेतु जिला कलेक्टर महोदय के साथ विचार विमर्श किया गया था। कलेक्टर महोदय ने आश्वासन दिया कि जल्दी ही जिला अस्पताल में नेत्र स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार हो जाऐगा।

चित्तौड़गढ़ जिले में नेत्र स्वास्थ्य की स्थिति

5 सालों में आंखों के ऑपेरशन की स्थिति

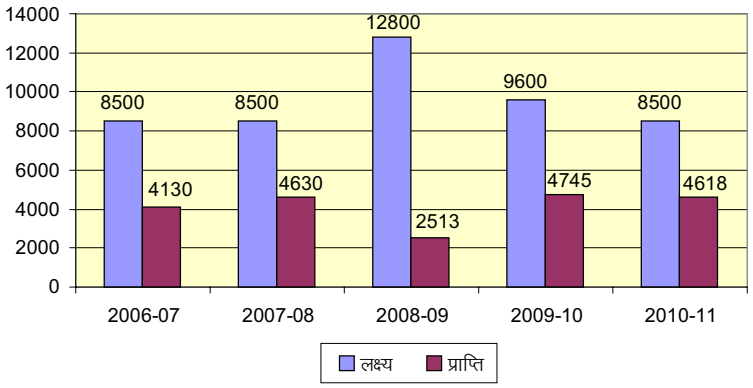

वर्ष 2010–2011 में वर्ग के आधार पर प्रदर्शन

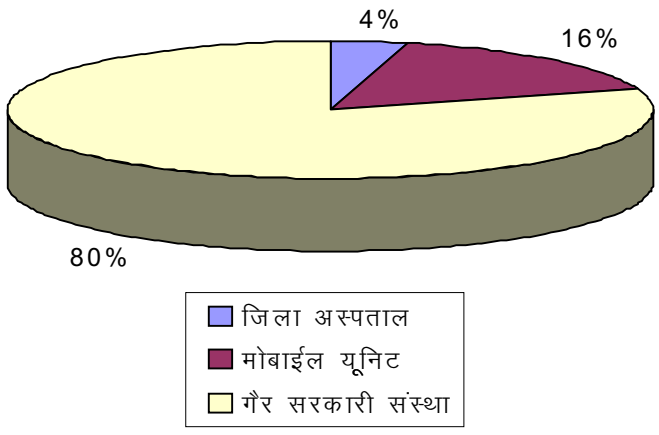

ब्रेल लिपि की शुरूआत

ब्रेल लिपि का प्रयोग नेत्रहीन व्यक्ति द्वारा पढ़ने लिखने के लिये किया जाता है। इस लिपि में मोटे कागज पर सुऐ से छेद करके लिखा जाता है और कागज में उभरे हुऐ छेदों को हाथ से स्पर्श करके उनको पढ़ा जाता है। ब्रेल लिपि अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषा में होती है। ब्रेल लिपि की शुरूआत वर्ष 1825 में लुई ब्रेल नामक एक नेत्रहीन व्यक्ति ने की।

लुई ब्रेल का जन्म 4 जनवरी 1809 को फ्रांस में हुआ। लुई के पिता चमड़े का काम करते थे। जब लुई तीन साल के थे, वे अपने पिता की गैर मौजूदगी में उनके औजारों से खेलने लगे जिससे एक लोहे का सूजा उनकी आंख में घुस गया और वे नेत्रहीन हो गये।

नेत्रहीन होने पर उनके पिता ने उन्हें पेरिस के रॉयल नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइण्ड चिल्ड्रन में भर्ती करवा दिया। उस समय नेत्रहीनों के लिये पढ़ने के लिये किताबें नहीं थीं। केवल पढ़ने का एक तरीका था। वहां अध्ययन करते हुये उन्हें यह लगा की नेत्रहीनों के लिये पढ़ने की यह पद्धति कठिन है। एक बार उसके विद्यालय में फ्रांस की सेना के एक अधिकारी कैप्टन चार्ल्स बार्बियर प्रशिक्षण के लिये आये और उन्होनें सैनिकों द्वारा अन्धेरे में पढ़ी जाने वाली नाइट राइटिंग लिपि के बारे में जानकारी दी। लुई को इससे एक विचार आया और उसने इस पर आधारित 6 बिंदुओं की लिपि तैयार की। यह तरीका एकदम सरल और आसान था। लुई ने जब यह लिपि बनाई तब वे मात्र 15 साल के थे।

सन् 1824 में यह लिपि दुनिया के लगभग सभी देशों में उपयोग में लाई जाने लगी। दुनिया के नेत्रहीनों के जीवन को अंधकार से मुक्त करने वाली इस महान आत्मा का देहांत 6 जनवरी 1852 को हुआ। लुई ने अपने आंखों की रोशनी खोकर नेत्रहीनों का जीवन उजागर कर दिया।

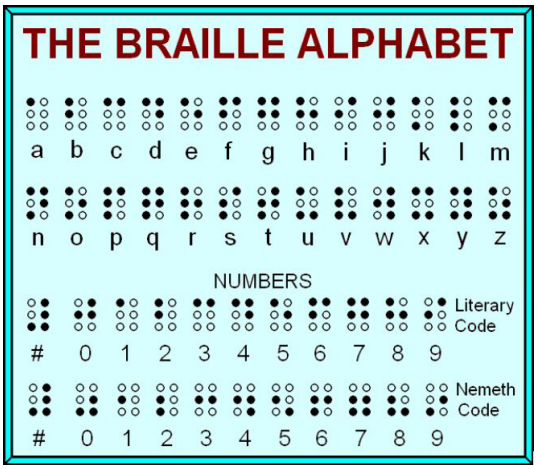

नेत्रहीन व अल्पदृष्टि बच्चों का विद्यालय में पंजीयन

विकलांगजनों के सर्वे के दौरान निम्बाहेड़ा और चित्तौड़गढ़ ब्लॉक में 6 से 14 वर्ष के 25 नेत्रहीन व अल्पदृष्टि बच्चे पाये गये। इनमें से 14 बच्चों का स्थानीय राजकीय विद्यालयों में पंजीयन कराया गया। 5 बच्चे उदयपुर व जोधपुर के विशेष स्कूल में पढ़ रहे हैं। 6 बच्चों की स्कूल में पंजीयन की प्रक्रिया चल रही है।

अनिल और सुनिता की आंखों का हुआ ऑपरेशन

24 फरवरी 2011 को साईटसेवर्स के कार्यक्रम प्रबंधक श्री प्रभात सिन्हा ने कट्स के साथ परियोजना क्षेत्र के निम्बाहेड़ा ब्लॉक में कृपारामजी की खेड़ी के सरकारी विद्यालय का दौरा किया। विद्यालय के अध्यापकों से चर्चा के दौरान पता चला कि उनके विद्यालय में पढ़ने वाले अनिल व सुनिता को कम दिखाई देता है।

अनिल मेघवाल की उम्र 13 वर्ष है तथा कक्षा सातवी में पढ़ता है और उसे काला पानी की शिकायत है। उसकी आंख की जांच पर पता चला कि उसकी एक आंख पूर्ण रूप से खराब है और दूसरी आंख भी कमजोर हो चुकी है। अनिल ने बताया कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है और उसकी माता मजदूरी करती है। उसके एक भाई व दो बहनें है और उसे जन्म से ही काला पानी की शिकायत है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने की वजह से कभी उनका इलाज नहीं कराया गया।

सुनिता की उम्र 14 वर्ष है तथा कक्षा आठवी में पढ़ने वाली छात्रा है और जन्म से ही उसे कम दिखाई देता है। वह कक्षा में ब्लैकबोर्ड के करीब आकर अक्षर को पहचान पाती है। उसकी जानकारी लेने पर सुनिता ने बताया कि उसके माता पिता मजदूरी करते हैं उसके एक भाई व दो बहने हैं। उसकी आंखों का कभी इलाज नहीं हुआ।

प्रभातजी ने पाया कि दोनों की आंखों में गम्भीर समस्या है। दोनों की आंखों की प्रारम्भिक जांच से पता चला कि ऑपरेशन द्वारा उनकी आंखे ठीक हो सकती हैं। उनके अभिभावकों से बात करने पर उन्होंने आर्थिक हालत अत्यंन खराब होने के कारण ऑपरेशन कराने में अपनी असमर्थता जताई। अतः साइटसेवर्स द्वारा गोमाबाई नेत्रालय नीमच में उनके निःशुल्क इलाज की व्यवस्था की गई। 26 फरवरी को उनकी एक एक आंख का ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन के बाद अनिल व सुनिता को एक आंख से बिल्कुल सही दिखाई दने लगा। उनकी दूसरी आंखों का ऑपरेशन छः माह बाद होगा। अब वे एक आंख से अच्छी तरह देख पा रहे हैं और अपनी दूसरी आंख के ठीक होने के इंतजार में हैं।

नेत्रहीनों के लिये प्रशिक्षण लेते प्रशिक्षणार्थी

नेत्र शिविर का चित्तौड़गढ़ व निम्बाहेड़ा में आयोजन

समुदाय बैठकों में लिया भाग

चित्तौड़गढ़ विकलांग मंच समिति की कलम से..

चित्तौड़गढ़ विकलांग मंच द्वारा जिले के सभी विकलांगों को समिति से जोडने का लक्ष्य है। मंच के माध्यम से विकलांगजनों से जुड़ी समस्याओं का मिलकर समाधान करना, विकलांगजनों को उनकी रूचि के अनुसार व्यवसाय चयन करा व दक्षतावर्धन करा उनको आत्मनिर्भर बनाना मंच की प्राथमिकता है।

अकसर देखने में आया है कि विकलांग आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर होते हैं और आर्थिक तंगी के कारण वे अपना सही ईलाज नहीं करवा पाते है। अतः समिति का उद्देश्य है जहां तक संभव हो ऐसे विकलांगों को शिविर के माध्यम से ईलाज करवाना और समाज की मुख्य धारा से जोड़ना है। समिति द्वारा प्रयास किया जायेगा कि ज्यादा से ज्यादा विकलांगों को सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ मिले और एक सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें।

समय–समय पर समुदाय के लोगों को विकलांगों के प्रति संवेदनशील बनाने का भी प्रयास किया जायेगा। पिछले माह चित्तौड़गढ़ विकलांग मंच समिति के सहयोग से एक अस्थि विकलांग को नौकरी से जोड़ा गया तथा 6 विकलांगों को नरेगा में रोजगार प्रदान कराया गया।

मीडिया

66 नेत्र रोगी ऑपरेशन के लिए चयनित

चित्तौड़गढ़. निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर में परामर्श

सार समाचार

66 रोगी ऑपरेशन के लिए चिन्हित

चित्तौड़गढ़ | जैन धर्मशाला स्टेशन पर पर आ
में 203 रोगियों की नेत्र विशेषज्ञों ने जांच क
को मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए चयनित कि
ने साइटसेवर्स के सहयोग से समुदाय आ
तहत गोमाबाई नेत्रालय नीमच व जिला अं
तत्वाधान में निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर

चित्तौड़गढ़। स्वयं सेवी संगठन कट्स केन्द्र द्वारा यहां जै
में निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर आयोजित किया गया।
समन्वयक आशीष त्रिपाठी ने बताया कि गोमाबाई नैत्रालय नीमच एवं जिला अंधता निवारण समिति के संयुक्त तत्वावधान निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 203 रोगियों का पंजीयन किया गया, जिनका विशेषज्ञ चिकित्
नेत्र परीक्षण किया गया। 66 मरीजों को मोतियाबिन्द ऑ
लिए चिह्नित किया गा। चिह्नित रोगियों का 4 मार्च को
नैत्रालय नीचच में

कनेरा। नेत्र शिविर में रोगियों की जांच करते चिकित्सक तथा अपनी बारी का इंतजार करते रोगी। फोटो। पुष्कर शर्मा

296 नेत्र रोगियों का परीक्षण

96 का ऑपरेशन आज

न्यूज सर्विस

कनेरा, 10 मार्च। कस्बे के राबामावि में गुरुवार को कट्स मानव विकास केन्द्र चित्तौडगढ़ व साईट सेवर्स संस्था के सहयोग से निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

कट्स के रामेश्वर लाल पचोरिया ने बताया कि शिविर में गोमाबाई नेत्रालय नीमच के चिकित्सक डॉ.कार्तिक नामदेव की टीम ने 45 गांवों से आए 296 नेत्र रोगियों का परीक्षण किया। इनमें से

कट्स मानव विकास केन्द्र
सेंती (रावला), चित्तौड़गढ़ 312025, फोन : (01472) : 241472 फैक्स : 247715
E-mail: chd@cuts.org, Website: www.cuts-international.org

मुद्रक : एम. एस. प्रिण्टर